हिन्दी का वैशिष्टय

डॉ. मनजीत कौर
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र

संक्षेपिका

भारत देश अपनी अद्‌भुत सभ्यता व संस्कृति के कारण विश्व के इतिहास में अपना अमिट व महत्त्वपूर्ण स्थान निर्धारित करता है। भारत में विभिन्न बोलियां व भाषाएँ बोली जाती हैं । हिन्दी को यहाँ की राष्ट्र भाषा व राजभाषा का दर्जा प्राप्त है । हिन्दी का इतिहास सैंकड़ों वर्ष पुराना है। इसका आविर्भाव अपभ्रंश से माना जाता है। तब से लेकर आज तक हिन्दी अनेक उतार-चढ़ावों को पार करते हुये संघर्ष करते हुये अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर पाई हैय इसके साथ ही हिन्दी ने संपूर्ण विश्व में अपनी विजय का परचम फहराया । आज हिन्दी न केवल विश्व के विभिन्न देशों में बोली व समझी जाती है बल्कि वहाँ के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई भी जाती है । हिन्दी विभिन्न क्षेत्रों यथा-कम्प्यूटर, मीडिया, सिनेमा, साहित्य, आदि में भी प्रभावशाली ढंग से प्रयोग की जा रही है ।

इसके अतिरिक्त अनेक विद्वानों, आलोचकों, महान साहित्यकारों के अविस्मरणीय योगदान ने भी हिन्दी के वैशिष्टय में चार चाँद लगाये हैं । प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य हिन्दी का वैशिष्टय स्थापित करने वाले प्रमुख कारणों को उजागर करना है ।

हिन्दी भाषा : अर्थ एवं विकास - हिन्दी भाषा अर्थात् 'हिन्द की भाषा'। भाषा प्रत्येक देश की अस्मिता का प्रतीक व उसकी उन्नति का आधार भी होती है। भाषा के अर्थ विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने अनुसार परिभाषित करने का प्रयास किया है । सामान्य शब्दों में कहा जाता है कि - भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने मन के विचार दूसरों के समक्ष व्यक्त करता है तथा दूसरों के विचार सरलता से समझ सकता है। भाषा के विषय में कुछ प्रसिद्ध विचारकों के मत निम्नलिखित हैं -

भारतीय विद्वानों के अनुसार भाषा का अर्थ ÷

1. डॉ. देवी शंकर द्विवेदी के अनुसार - "भाषा यादृच्छिक वाक्प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से मानव समुदाय परस्पर व्यवहार करता है ।"[1]

2. आकृ देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार - "उच्चरित स्वन-संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा है।"[2]

3. डॉ भोलानाथ तिवारी कहते हैं - "भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित मूलतः यादृच्छिक स्वन प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके हारा किसी भाषा समाज के लोकृ आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं ।"[3]

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार भाषा का अर्थ

1. प्लेटो के अनुसार - "विचार आत्मा की एक मूल बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं ।"[4]

2. मैक्समूलर के अनुसार - "भाषा और कुछ नहीं है केवल मानव की चतुरबुद्धि द्वारा आविष्कृत ऐसा उपाय है जिसकी मदद से हम अपने विचार सरलता और तत्परता से दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं और चाहते हैं कि इसकी व्याख्या प्रकृति की उपज के रूप में नहीं बल्कि मनुष्य कृत पदार्थ के रूप में करना उचित है ।"[5]

3. हेनरी स्वीट का कथन है - "जिन व्यक्त /वनियों हारा विचारों की अभिव्यक्ति होती हैह उसे भाषा कहते हैं ।"[6]

संस्कृत आचार्यों के अनुसार भाषा का अर्थ

1. महर्षि पतंजलि कहते हैं - "व्यक्ता वाचि वर्णा येषां त इमे व्यक्तवाचः ।"[7]

2. अमर कोष – में भाषा को वाणी का पर्याय बाते हुये कहा गया है – “ब्राह्य तु भारती भाषा कीर् वाक् वाणी सरस्वती ।”[8]

भाषा का विकास–भाषा के विषय में विहानों ने अत्यन्त गहन विचार–विमर्श करके अपने मत व्यक्त किये हैं । जब भाषा के विकास की बात आती है तो पहला प्रश्न उठता है – भाषा की उत्पत्ति । इस विषय में भी विचारकों में मतभेद रहे हैं । विभिन्न विद्वानों ने भाषा की उत्पत्ति के निम्नलिखित सिद्धांत स्वीकार किये हैं ÷

1. दैवीय सिद्धांत	2. संकेत सिद्धांत
3. धातु सिद्धांत	4. आवेकृ सिद्धांत
5. यो–हे–हो सिद्धांत	6. अनुकरण सिद्धांत
7. इंगित सिद्धांत	8. संपर्क सिद्धांत
9. संगीत सिद्धांत	10. समन्वय सिद्धांत

यह बात भी सर्वविधित है कि – भाषा के दो रूप होते हैं – (क) मौखिक (ख) लिखित ।

जब हिन्दी भाषा के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा की जाती है तो भारतीय आर्य भाषाओं को तीन आयामों में विभाजित किया जाता है ÷

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ (1500 ई०पू० से 500ई०पू० तक)
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ (500 ई०पू०से 1000 ई०पू०तक)
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ (1000 ई० से अब तक)

वैदिक संस्कृत
↓
लौकिक संस्कृत } प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएं
↓
पाली
↓
प्राकृत
↓
अपभ्रंश } मध्यकालीन भारतीय अर्थ भाषाएं

अप्रभ्रंशः

शौरसेनी – पश्चिमी हिन्दी, गुजराती राजस्थानी
महाराष्ट्री – मराठी
मागधी – बिहारी, बंगला, उड़िया, असमी
अर्ध मागधी – पूर्वी हिन्दी
पैशाची – लहंदा पंजाबी
ब्राचड़ – सिंधी
खस – पहाड़ी

हिन्दी भाषा के विकास में इसकी उपभाषाओं व विभिन्न बोलियों का भी विशेष योकृदान रहा है । इन्हें मुख्य रूप से पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है ÷

1– पश्चिमी हिन्दी 2– पूर्वी हिन्दी 3– बिहारी हिन्दी

4– राजस्थानी हिन्दी 5– पहाड+ी हिन्दी ।

आरंभ से लेकर आज तक हिन्दी भाषा अपनी बोलियों व उनमें रचित साहित्य के मा/यम से अपने कौरव का परचम लहरा रही है। हिन्दी अनेक पड+ावों को तथा अनेक उतार–चढ़ाओं को सफलता से पार करती हुई अपने वर्तमान स्व:प को प्राप्त कर पाई है ।

हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप : प्रत्येक भाषा के विभिन्न रूप होते हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है :

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

1. मूल भाषा – जिस भाषा से विश्व की सभी भाषाएँ उत्पन्न हुई हैंह उसे मूल भाषा कहते हैं। मूल भाषा के विषय में विद्वानों में काफी मतभेद रहा है ।

2. मातृ भाषा – मातृ भाषा का सामान्य अर्थ है – 'माँ की भाषा ।' बच्चा सर्वप्रथम अपनी माँ की भाषा को सुनता है, सीखता है, उसे ही मातृभाषा कहते हैं ।

3. बोली – किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली उपभाषा को बोली कहा जाता है ।

डॉ. शांति स्वरूप गुप्त के शब्दों में – "दो चार स्थानीय बोलियाँ मिलकर जिस भाषा का विकास करती हैं वह बोली कहलाती हैं ।"[9]

4. विभाषा – किन्हीं विशेष कारणों या भौगोलिक विस्तार के कारण जब कोई बोली किसी प्रान्त या उप क्षेत्र में प्रचलित होती है तो उसे 'विभाषा' कहा जाता है ।

5. मानक/परिनिष्ठित भाषा – समाज के सभ्य तथा सुशिषित वर्ग द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा को मानक भाषा कहा जाता है ।

6. साहित्यिक भाषा – साहित्य लेखन में प्रयोग की जाने वाली भाषा साहित्यिक भाषा कहलाती है । भाषा का यह :प अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है ।

7. राज भाषा – राज काज के कार्यों में प्रयोग की जाने वाली भाषा को राजभाषा कहा जाता है । भारत की राजभाषा विभिन्न कालों में बदलती रही है । वर्तमान में हिन्दी भाषा को ही राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है ।

8. राष्ट्र भाषा – किसी देश के अधिकतर लोग जिस भाषा को समझते हों या बोलते हों, वो उस देश की राष्ट्र भाषा कहलाती है। भारत में राष्ट्र भाषा का दर्जा भी हिन्दी को ही प्राप्त है ।

9. विशिष्ट भाषा – विशेष व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रयोग की जाने वाली विशेष भाषा को विशिष्ट भाषा कहते हैं । इसका उपयोग कुछ समुदाय के लोग ही करते हैं यथा – कानून की भाषा, शेयर बाजार की भाषा, डॉक्टरों की भाषा, पुरोहितों की भाषा आदि ।

10. सम्पर्क भाषा/माध्यम भाषा – जब दो विभिन्न भाषाओं को जानने वाले व्यक्ति किसी तीसरी भाषा में व्यवहार करें जो भाषा वो दोनों जानते हैं, तो वो भाषा माध्यम या संपर्क भाषा होती है।

11. संचार भाषा – संचार के विभिन्न साधनों के अन्तर्गत जो भाषा उपयोग की जाती है वो संचार भाषा कहलाती है । यथा –समाचार पत्रों की भाषा, आकाशवाणी की भाषा दूरदर्शन की भाषा इंटरनेट की भाषा, इलैक्ट्रोनिक मीडिया की भाषा आदि।

12. अन्तर्राष्ट्रीय भाषा – जिस भाषा में विभिन्न राष्ट्र परस्पर व्यवहार करते हैं वो अन्तर्राष्ट्रीय भाषा कहलाती है। अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा 'अंग्रेजी' को प्राप्त है ।

इस प्रकार भाषा के विभिन्न रूप हो सकते हैं । भारत देश की भाषा हिन्दी इन सभी रूपों की कसौटी पर खरी उतरती हैं । इस प्रकार भी हिन्दी का वैशिष्टय और अधिक बढ़ जाता है। वर्तमान में हिन्दी का विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ता उपयोग भी इसके गौरव में वृद्धि करता है ।

हिन्दी भाषा की विशेषताएँ :

प्रत्येक भाषा की अपनी–अपनी प्रवृत्तियाँ होती है जिनके कारण वो उन्नति के मार्कृ पर अकृसर होती रहती है । हिन्दी भाषा

की भी कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य भाषाओं से अलकृ करती हैं तथा इसे अद्‌भुत वैशिष्टय प्रदान करती हैं । इन प्रवृतियों का विवरण इस प्रकार है ÷

1. हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है ।

2. ये सबसे लचीली भाषा है ।

3. ये एक सरल भाषा है ।

4. हिन्दी एक व्यवस्थित भाषा है ।

5. ये भाषा विश्व में तीव्रता से प्रसारित हो रही है ।

6. हिन्दी का शब्दकोष अत्यन्त विशाल है ।

7. हिन्दी की लिपि देवनाकृरी एक वैज्ञानिक लिपि है ।

8. हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से अधिक है ।

9. हिन्दी बोलने व समझने वाले लोकृों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है ।

10. हिन्दी विश्व भर में तीसरे स्थान पर आती है ।

11. इसके विभिन्न रूप हैं जो इसे गौरवान्वित करते हैं ।

12. इसका साहित्य अत्यन्त विशाल, समृद्ध एवं मानव कल्याण हेतु है ।

13. हिन्दी सामान्य जनता से जुड़ी हुई भाषा है ।

14. वैश्वीकरण, बाजारवाद, सोशल मीडिया की दुनिया में हिन्दी का खूब वर्चस्व है ।

15. हिन्दी वास्तव में 'विश्व भाषा' बनने का पूर्ण अधिकार रखती है ।

हिन्दी का वैशिष्टय : विभिन्न संस्थाओं और महानुभावों का योगदान :

18वीं शताब्दी में भारत को एकता के सूत्र में पिरोने के उद्देश्य से अनेक भावनात्मक क्रांतियों ने जन्म लिया। उस समय ये विचार भी उभरा कि - एक भाषा भी देश को एकता के सूत्र में पिरो सकती है। यही कारण है कि-भारत की अनेक सामाजिक, धर्मिक, राजनीतिक, साहित्यिक संस्थाओं एवं अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, समाज सुधारकों आदि ने हिन्दी भाषा को सम्मानजनक पद से अलंकृत करने के लिये भरसक प्रयास किये ।

डॉ. अम्बाशंकर नागर का मन्तव्य है - "सन् 1857 का आंदोलन दासता के विरुद्ध स्वतंत्रता का पहला आंदोलन था । यह आंदोलन यद्यपि संगठन और एकता के अभाव के कारण असफल रहा पर इसने भारतवासियों के हृदय में स्वतंत्रता की उत्कट अभिलाषा उत्पन्न कर दी। आगे चलकर जब भारत के विभिन्न प्रांतों में स्वतंत्रता के लिये संगठित प्रयत्न आरंभ हुये तो यह स्पष्ट हो गया कि बिना एक सामान्य भाषा के देश में संगठन होना असंभव है ।"

विभिन्न संस्थानों का योगदान - हिन्दी भाषा की उन्नति के लिये जिन संस्थाओं ने अपना महत्त्वपूर्ण दिया उनका वर्णन इस प्रकार है :

1. ब्रह्म समाज - ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राम मोहन राय ने सन् 1828 में कलकत्ता में की। वे भारतीय संस्कृति के पुजारी थे । उन्होंने भारतवासियों में राष्ट्रीय चेतना जगाने के उद्देश्य से इस समाज की स्थापना की थी। वे जहाँ एक ओर अंग्रेजी भाषा को महत्त्वपूर्ण भाषा के रूप में सम्मान देते थे, दूसरी ओर वे हिन्दी के प्रबल समर्थक भी थे । उन्होंने 'बंकृदूत नामक पत्र कलकत्ता से प्रकाशित करवाया जो हिंदी, बंगला, अंग्रेजी फारसी में छपता था ।

2. आर्य समाज - आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 में मुंबई में की। भारत के सामाजिक आन्दोलनों में आर्य समाज में स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसके आंदोलनकारी हिन्दी को 'आर्य भाषा' के नाम से सम्बोधित

करते थे । आर्य समाज के 28 नियमों में पाँचवाँ नियम हिन्दी पढ़ना था। इसके सम्मेलन हिन्दी भाषा में ही होते थे। आर्य समाज ने अनेक विद्यालयों, गुरुकुलों की स्थापना की जिन्होंने हिन्दी का पठन-पाठन अनिवार्य था ।

भोलानाथ तिवारी के शब्दों में - "स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक धर्म का प्रचार करते थे इसके लिये वे संस्कृत में भाषण देते थे । 48 वर्ष की अवस्था में जब स्वामी जी कलकत्ता पहुंचे और उन्होंने संस्कृत में भाषण दिया तो आचार्य केशवचंद्र सेन ने उनसे कहा कि यदि आप पूरे भारत को अपनी बात सुनाना चाहते हैं तो हिन्दी सीखिए और उसी का प्रयोकृ कीजिये । स्वामी जी ने आचार्य सेन की बात मानकर 48 वर्ष की आयु में हिन्दी सीखी, हिन्दी में भाषण देना शुरू किया और अपना ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा । वास्तव में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान है । आर्य समाज ने हिन्दी को ऐसे घरों में प्रवेश करवा दिया जहाँ इसका जाना संभव नहीं था ।"[11]

3. प्रार्थना समाज - महादेव गोविंद रानाडे ने सन् 1867 में प्रार्थना समाज की स्थापना की। इस संस्था का अधिकांश कार्य हिन्दी भाषा में ही होता था। रानाडे के अतिरिक्त आर. जी. भण्डारकर ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान दिया।

4. थियोसोफिकल सोसाइटी - इसकी स्थापना मैडम बलावत्सकी और कर्नल आलकोट ने सन् 1875 में अमेरिका में की। सन् 1897 में इसका मुख्य कार्यालय मुंबई में बनाया गया । ये संस्था स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विशेष रूप से प्रभावित हुई तथा उन्होंने स्वामी जी को **'आध्यात्म गुरु'** भी स्वीकार किया ।

सन् 1898 में काशी में श्रीमती एनीबेसेंट ने हिन्दू कन्या महाविद्यालय की स्थापना की व अनेक शिक्षण संस्थाएं खोलीं। इनमें हिन्दी, संस्कृत व अन्य भाषाओं की शिक्षा भी दी जाती थी।

ऐनीबेसेंट अपनी पुस्तक 'नेशन बिल्डिंग' में कहती है "हिन्दी जानने वाला आदमी संपूर्ण भारत में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने वाले मिल सकते हैं। हिन्दी सीखने का कार्य ऐसा त्याग है जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को राष्ट्र की एकता के हित में कार्य करना चाहिये।"[12]

सनातन धर्म सभा - सन् 1895 में पं. दीनदयाल शर्मा ने सनातन धर्म सभा की स्थापना-हरिद्वार और दिल्ली में की। सन् 1900 में पं. मदनमोहन मालवीय ने सभा को व्यवस्थित रूप प्रदान किया।

इस सभा ने संस्कृत और हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में खूब योकृदान दिया। इसके अन्तर्गत गोस्वामी गणेशदत्त व श्रद्धाराम फिल्लौरी का नाम भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है ।

6. भारतेन्दु मण्डल - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने कहा था, "निज भाषा उन्नति अह, सब उन्नति को मूल" भारतेन्दु तथा इनके मण्डल के अन्य साहित्यकारों प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, श्रीनिवास दास आदि ने हिन्दी भाषा में साहित्य सृजन में विशेष योगदान दिया।

7. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा-मद्रास - सन् 1918 में महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की योजना बनाई। उनके पुत्र देवदास गांधी ने इस सभा के प्रथम प्रचारक के रूप में कार्य किया, इस सभा का राष्ट्रीय महत्त्व प्रदान किया गया है।

8. नागरी प्रचारणी सभा-काशी - 10 मार्च 1893 में नागरी प्रचारणी सभा की स्थापना हुई। पण्डित राम नारायण मिश्र, बाबू श्याम सुंदर दास, श्री गोपाल प्रसाद खत्री, मदन मोहन मालवीय, श्रीधर पाठक, अम्बिका दत्त व्यास, बद्री नारायण चौधरी आदि ने इस सभा के संरक्षकों के रूप में कार्य किया। इस सभा ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अथक प्रयास किया।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महान विभूतियों का योगदान :

हिन्दी भाषा को सम्मानजनक दर्जा प्रदान करने में अनेक संस्थानों के अतिरिक्त महान् विद्वानों, समाज सुधारको एवं साहित्यकारों का योगदान भी रहा है जिन्होंने हिन्दी के वैशिष्टय को और अधिक निखार दिया । इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है- बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, पंडित, मदनमोहन मालवीय, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, महात्मा गांधी काका कालेलकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सेठ गोविंद दास, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, विनोबा भावे आदि महान्

ISBN: 978-81-954645-0-0

विभूतियों के नाम बड़े सम्मान से लिये जाते हैं जिन्होंने हिन्दी को गौरवान्वित किया है। इनके अतिरिक्त हिन्दी भाषा के अनेक महान् साहित्यकारों ने भी इसके वैशिष्ट्य में चार चाँद लगाये हैं । उन्होंने अपनी अमर रचनाओं के माध्यम से हिन्दी को विश्व इतिहास में गौरवमयी स्थान दिलवाया है।

आदिकाल के मुख्य कवि - अमीर खुसरो, विद्यापति ।

भक्तिकाल के मुख्य कवि - संत कबीरदास, सूरदास तुलसीदास, मलिक मुहम्मद जायसी, संत रविदास, मीराबाई, रामानन्द, ईश्वर दास, कुरु नानक, सुन्दर दास, अष्ठ छाप कवि।

रीतिकाल के कवि - चिंतामणि, मतिराम, देव, केशव वृन्द, गुरु गोविन्द सिंह ।

आधुनिक काल के कवि - भारतेन्दु द्विवेदी जी, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त आदि अनेक महान साहित्यकारों ने अपनी महान् रचनाओं के माध्यम से हिन्दी भाषा को सुशोभित किया है। इन नामों की सूची बहुत लम्बी है। वर्तमान काल में भी अनेक संस्थाएं व साहित्यकार हिन्दी की और अधिक उन्नति के लिये संघर्षरत हैं।

निष्कर्ष एवं सुझावः

उपर्युक्त विचारों से ये बात पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है कि हिन्दी भाषा विश्व की महत्त्वपूर्ण भाषाओं में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान निर्धारित करती है। हिन्दी अनेक पड़ावों को पार करते हुये यहाँ तक आई है। इसका एक गौरवमयी तथा व्यवस्थित इतिहास रहा है। हिन्दी भाषा को उन्नति के चरम शिखर पर पहुँचाने में अनेक धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक संस्थाओं, अनेक समाज सुधारकों, अनेक महान साहित्यकारों का अविस्मरणीय योगदान रहा है जिसके लिये हिन्दी सदैव इनकी ऋणी रहेगी । इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि - जिस देश ने अपनी सभ्यता, संस्कृति व भाषा को विस्मृत कर दिया; उसका अस्तित्त्व ही विश्व से समाप्त हो गया। भारत की सभ्यता व संस्कृति अत्यन्त प्राचीन रही है तथा विश्व में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है । ये भी सत्य है कि - किसी देश की उन्नति में उसकी भाषा की भी विशेष भूमिका रहती है । इसलिये भारतवासियों का ये परमकर्त्तव्य हो जाता है कि वो अपनी मूल संस्कृति, अपनी भाषा पर गर्व करें, पाश्चात्य रंग में रंगकर अपने अस्तित्त्व पर प्रश्नचिह्न न लगने दें । सदैव अपनी मूल भारतीय संस्कृति का हृदय से सम्मान करें ।

संदर्भ सूची

1. राजनाथ भट्ट, भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा, पृ. 6
2. उपर्युक्त, पृ. 6
3. उपर्युक्त, पृ. 6
4. प्रोक् नरेश मिश्र, भाषा और हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ. 2
5. उपर्युक्त, पृ. 2
6. उपर्युक्त, पृ. 3
7. उपर्युक्त, पृ. 1
8. उपर्युक्त, पृ. 1
9. शांति स्वरूप गुप्त, श्रेष्ठ हिन्दी व्याकरण तथा रचना, पृ. 5
10. प्रो. नरेश मिश्र, भाषा और हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ. 364
11. भोलानाथ तिवारी, राजभाषा हिन्दी, पृ. 27
12. प्रो. नरेश मिश्र, भाषा और हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ.374